सम्राट अकबर और भारतीय संगीत

सुरभी घुले
शोधार्थी (संगीत)
वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली (राज.)

डॉ. संतोष पाठक
एसोसिएट प्रोफेसर,
वनस्थली विद्यापीठए वनस्थली

सारांश

राजनीतिक आंतरिक विघटन के कारण मुगल काल के आरंभ के समय ऐसा रहा कि हम अपने अस्तित्व को सुदृढ़ नहीं रख सके। 1526 ई. में बाबर की विजय हिंदुस्तान के कुछ हिस्सों में हुई और लगातार यह वंश भारतीय सत्ता को हस्तगत करता चला गया। अकबर संगीत का बड़ा संरक्षक था, उसके शासन काल में संगीत का अच्छा प्रचार प्रसार हुआ एवं सम्राट अकबर का शासन काल भारतीय संगीत का स्वर्णयुग भी कहलाया जाने लगा। इसके काल में सभी कलाओं का उत्कर्ष हुआ। प्रस्तुतशोध पत्र के माध्यम से प्रयास मुगलकाल में सम्राट अकबर के शासनकाल में भारतीय संगीत के विकास और यह युग संगीत का स्वर्णयुग किस प्रकार कहलाया जाने लगा पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालना है।

मुख्य शब्द मुगलकाल, स्वर्णिम काल, सम्राट अकबर, भारतीय संगीत,

मध्यकाल की अवधि 1100 ई0 के आरम्भ से 1800 ई0 के अन्त तक मानी जाती है। भारत एक प्रफुल्लित और अमीर देश होने के कारण मुसलमानों ने इस पर हमले शुरू कर दिए। इनका एकमात्र उद्देश्य भारत को लूटना था। महमूद गजनवी ने चार बार हमले किए और धीरे धीरे मुगलों ने भारत पर आधिपत्य कर लिया, जिस कारण परिवर्तन होना स्वाभाविक ही था और इस परिवर्तन का प्रभाव भारतीय चित्रकलाए स्थापत्य कलाए नृत्य कला और संगीत कला में भी स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। संगीत के प्रचार व प्रसार हेतु राजाओं ने अत्याधिक प्रयत्न किए जिनमें राजा मान सिंह तोमर व मुगल सम्राटों के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। मुसलमानों के आगमन के पश्चात भारतीय संगीत की मूलधारा प्रवाहमान रही। मुसलमान संगीतज्ञों ने भारतीय संगीतज्ञों से कुछ प्रेमपूर्वक या बलपूर्वक बहुत कुछ प्राप्त किया और अपनी विशिष्टता प्रमाणित करनी चाही परन्तु इस मेल से हिन्दुस्तानी संगीत की विभिन्न धाराएँ प्रस्फुटित हुई। धुपद, धमार, ख्याल, ठुमरी, टप्पा, गजल आदि गायन शैलियों का जन्म हुआ।

कैप्टन विलर्ड के अनुसार हिन्दुस्तान पर मुस्लिम राजाओं की विजय से यहॉ से संगीत के इतिहास का एक महत्वपूर्ण काल शुरू होता है। संगीत कला की दृष्टि से मुगलकाल जिसे मध्यकाल के नाम से भी जाना जाता है वह बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। औरंगजेब की मृत्यु के साथ बाबर द्वारा स्थापित और अकबर द्वारा सुव्यवस्थित किए गए मुगल साम्राज्य का पतन हो गया। बाबर से लेकर औरंगजेब तक के काल को ही मुगलकाल कहकर पुकारते हैं।मुगलकाल भारतीय संगीत का स्वर्णिम युग कहा जाता है। मुगलकाल के अधिकांश शासक कला प्रिय थे और साथ ही मुगल बादशाहों एवं सम्राटों ने संगीत के कलाकारों को राजाश्रय प्रदान किया। शास्त्रीय संगीत में ख्याल गायन भी इस युग की ही देन है। उन्होंने अन्य कलाओं के साथ साथ संगीतकला को भी आश्रय दिया एवं उसके विकास में अपना योगदान प्रदान किया।

मुगलकाल में सर्वप्रथम बाबर मुगल बादशाह हुए। बाबर ने इब्राहीम लोदी को परास्त कर मुगल सम्प्रदाय की नींव रखी। बाबर संगीत.प्रेमी तथा संगीत मर्मज्ञ था। उसके दरबार में अनेक गायक वादक रहते थें बाबर संगीत की महान शक्ति को स्वीकार करता था। बाबर के काल में कल्लिनाथ प्रसिद्ध संगीतज्ञ हुए। जिन्होंने शारंगदेव कृत "संगीत रत्नाकर" की विस्तृत टीका लिखी। बाबर का पुत्र हुमायूँ भी संगीत प्रेमी था। इसके दरबार में अनेक गायक वादक थे। हुमायूँ को भी संगीत का आध्यात्मिक रूप पसंद था। अपने संकट के क्षणों में भी सह संगीत के द्वारा नवीन उत्साह प्राप्त करता था। हुमायूँ संगीतज्ञों का आदर करता था।हुमायूँ का पुत्र अकबर भी बहुत संगीतानुरागी था।

अकबर के शासन काल में संगीत 1556.1605 ई.

इसी प्रकार अपनी सफलता के बढ़ते हुए कदमों के साथ 1556ई. में अकबर के शासन काल का प्रथम चरण तक आ पहुँचा। यह काल भारतीय संगीत, साहित्य, कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण था। अकबर एक अच्छा शासक होने के साथ संगीत प्रेमी भी था। अकबर के समय में ही संगीतज्ञ स्वामी हरिदास हुए, जो अपनी एकाग्रता और प्रतिभा के फलस्वरूप संगीत में अलौकिक अभूतपूर्व शक्तियों का संपादन कर सके।इनके शिष्यों में तानसेन, बैजूबावरा उल्लेखनीय हैं। इनके शिष्यों ने नवीन रागों और धुपद, धमार, तिरवट, तराना, चतुरंग आदि भिन्न. भिन्न गीत प्रकारों की रचना की। अकबर के नवरत्नों में तानसेन ने अपनी प्रखर आभा द्वारा संगीत के प्रेम व शाश्वतता का संबल लेकर संगीत जगत में क्रांति उपस्थित की। उसके विषय में लिखे पदों से पता चलता है कि अकबर "संगीत रत्नाकर" जैसे ग्रंथों पर गुणियों के साथ चर्चा करता था तथा उसको समझने का प्रयास करता था। अकबर स्वयं बड़ा अच्छा नक्कारा बजाता था।

अकबर विद्वानों एवं संगीतकारों के संसर्ग में रहता था। इसके काल में राग सम्बन्धी अनेक प्रयोग हुए। रामदास द्वारा रामदासी मल्हार एवं तानसेन द्वारा अनेक रागों की रचना हुई। अकबर समय.समय पर संगीतज्ञों को पुरस्कृत करता रहता था। अकबर को उच्चकोटि का धार्मिक संगीत विशेष प्रिय था। संगीत उसके लिए सिर्फ विलास का एकमात्र उपकरण नहीं था, बल्कि वह इसको रूहानी विकास के लिए एक शक्तिशाली सम्बल समझता था।अकबर के दरबार में हिन्दूए ईरानी, तूरानी, कश्मीरी बहुत से स्त्री–पुरुष संगीतज्ञ थे। इनके दरबारी मसीत खां ने सितार पर मसीतखानी गत का प्रचलन किया। अकबर के समय में ध्रुपद पद्धति का विशेष प्रचार हुआ। इस समय जहांउत्तर भारतीय संगीत में विदेशी संगीत का मिश्रण हो गया था वहीं दक्षिण में भारतीय संगीत अपने प्राचीन रूप में विद्यमान था।

इस प्रकार भारतीय संगीत की दृष्टि से अकबर के काल को स्वर्णयुग कह सकते हैं, क्योंकि इस काल में भारतीय संगीत की सभी प्रवृत्तियों का विकास सुचारू रूप से हुआ। इस काल में ख्याल गायकी व ध्रुपद गायकी दोनों का प्रचार हुआ। तानसेन ने कई राग बनाए। जैसे. मियॉ मल्हार, दरबारी इत्यादि।इसी काल में संगीत तथा भक्ति काव्य के समन्वय की दृष्टि से भी यह काल महत्वपूर्ण रहा, जिसके द्वारा भारतीय संगीत की दार्शनिक पृष्ठभूमि का विकास व प्रचार संभव हुआ।

मुगल काल में संगीत में जो भी परिवर्तन आ रहे थे उनमें मुगल शासकों ने भी अपना अहम योगदान निभाया है। उन्होंने संगीत के मार्ग में बाधा न बनते हुए उसे प्रोत्साहन व सम्मान दिया। प्रायः सभी बुद्धिजीवी अनुभव करते हैं कि हिंदुस्तानी संगीत पद्धतियों एवं घराने जो भी आज प्रचलित हैं। यह सभी मुगल काल की नींव पर ही बने हैं।

अतः निष्कर्षत हम कह सकते हैं कि मुगलों के आगमन से भारतीय संगीत की स्थिति और सुदृढ़ होती गई। विभिन्न नए–नए आविष्कारों द्वारा भारतीय संगीत की कई धाराएँ प्रस्फुटित हुई, इस प्रकार यह कहा जा सकता हैं कि अकबर ने अपने शासन काल में भारतीय संगीत का फैलाव देश के कोने कोने में किया और इसके साथ भारतीय संगीत का स्तर दिन प्रतिदिन बढ़ता गया। भारतीय संगीत की जो उज्जवलता थी वह स्थिर रही। अतएव सम्राट अकबर का शासन काल भारतीय संगीत के लिए स्वर्णिम काल था।

संदर्भ ग्रंथ :

1. उप्रेती, गिरिश चन्द्र (1996) भारतीय संगीत का बदलता परिद्रश्य दिल्ली, राहुल पब्लिशिंग हाऊस,

2. शर्मा, एल.पी., (2019) मुगल कालीन भारत, आगरा लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन

3. आचार्य बृहस्पति (1974) मुसलमान और भारतीय संगीत दिल्ली, राज कमल प्रकाशन।

4. यजुर्वेदी, सुलोचना वंबृहस्पतिण् (1976) खुसरो, तानसेन तथा अन्य कलाकार (नईदिल्ली) राज कमल प्रकाशन।

5. जौहरी, सीमा. (2004). भारतीय संगीत – प्रथम संस्करण जयपुरः मेसर्स यूनिवर्सिटी बुक हाऊस।

Invitation for Research paper for ART FRAGRANCE JOURNAL (ISSN NO:2395-2148)

I feel privileged to invite you to submit your research paper focused on fine arts/performing arts/fashion to our upcoming issue 2022.

Guidelines for research paper submission and fee.

Your research paper should be original and unpublished and should not be more than 3000 Words for Hindi papers use only kruti dev 10,kruti dev 11(font size 14),for English Times new roman(font size 10) figures must be inserted into the document in JPEG. Only World file will be accepted, along with this you have to submit Plagrism report.You can send your paper on this email id siff.fragrance14@gmail.com

For Printing/Publication of one research paper Individuals Rs 1200 for Academicians,1000rs for research scholar and others.600 Rs for Each Co Author fee can be paid through D.D.in favor of ART FRAGRANCE payable at Meerut or you can deposit cash/fund transfer on Art fragrance current A/c.No.6623002100001230,IFSC code PUNB662300 Punjab National Bank, Branch :Delhi-Haridwar Bypass road. Opp. Swami Vivekanand Subharti University,Meerut 250005

For more details contact to Editor: (Prof).Dr.Bhavna Grover 9639010177 ,08126654539 Email id siff.fragrance14@gmail.com